(1512) " **लुबि अर्दने** " (I-भ्वादिः-427. सक. सेट्. पर.)

'लुम्बयेत् तुम्बयेदर्दे **शपि लुम्बति** तुम्बति ॥' (श्लो. 139) इति **देवः**। **क्षीरतरङ्गिण्यामयं** धातुः न दृश्यते।

लुम्बकः-म्बिका, लुम्बकः-लुम्बिका, लुलुम्बिषकः-षिका, लोलुम्बकः-म्बिका; लुम्बिता-त्री, लुम्बयिता-त्री, लुलुम्बिषिता-त्री, लोलुम्बिता-त्री; इत्यादीनि रूपाणि सर्वाण्यपि भौवादिक**कुण्ठति**वत् (209) ऊह्यानि। कर्मणि क्तप्रत्यये [A]परिलुम्बितः इति।

(1513) " **लुबि अदर्शने** " (X-चुरादिः-1657. अक. सेट्. उभ.)

'**लुम्बयेद्** तुम्बयेदर्दे शपि लुम्बति तुम्बति ॥' (श्लो. 139) इति **देवः**। **क्षीरतरङ्गिण्यां** '—अर्दने' इत्युक्तम्। **देवमैत्रेयौ** 'अर्दने' इत्येव पठतः। चुरादिपाठादेव इदित्करणात् लुम्बयति-लुम्बति इति सिद्धेः **अर्दने**ऽर्थे भ्वादौ पाठोऽस्य व्यर्थः स्यात्। इह [चुरादौ] **अदर्शने**ऽर्थे तु अर्थभेदात् सोऽपि [भ्वादौ पाठः] सार्थकः स्यात्। अत एव '**अदर्शने**' इत्येव समञ्जसमिति भाति।

लुम्बकः-म्बिका, लुलुम्बयिषकः-षिका, लुम्बकः-म्बिका, लुलुम्बिषकः-षिका, लोलुम्बकः-म्बिका; लुम्बयिता-त्री, लुलुम्बयिषिता-त्री, लुम्बिता-त्री, लुलुम्बिषिता-त्री, लोलुम्बिता-त्री; इत्यादीनि रूपाणि भाषार्थकचौरादिक**कुंशयति**वत् (232) ऊह्यानि। कर्मणि क्तप्रत्यये [B]लुम्बितम्-तः इति।

(1514) " **लुभ गार्ध्ये** " (IV-दिवादिः-1238. सक. सेट्. पर.)

'भूवादेरवृत्कृतत्वात् **लोभते** इति भवति इति **आत्रेयः**' इति **मा. धा. वृत्ति**-रिहानुसन्धेया। '**गार्ध्यम्**=आकाङ्क्षा' इति च तत्र **वृत्तिः**।

'**गार्ध्ये लुभ्यति** मोहार्थे तुदादेर्लुभतीति शे।' (श्लो. 141) इति **देवः**।

A. '..... दिक्कुम्बितेऽर्के **परिलुम्बिताम्बुजे** ॥' धा. का. 1-55.

B. 'किं कुम्भ्यते सदसि **लुम्बितवैभवोऽहम्**.....।' धा. का. 3-29.